

छूकर मेरे मन को किया तूने क्या इशारा...



विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
vjsukhwani@gmail.com

भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में 'कपूर परिवार' की तरह ही 'रोशन परिवार' का भी बड़ा योगदान रहा है। रोशन नागरथ (लोकप्रिय नाम 'रोशन') एक महान संगीतकार थे, जिन्होंने 'बरसात की रात', 'ताजमहल', 'दिल ही तो है', 'ममता', 'नई उम्र की नई फसल', 'देवर', 'बहु बेगम', 'अनोखी रात' जैसी यादगार फिल्मों में अमर संगीत दिया था।

उनके पुत्र राकेश रोशन सुप्रसिद्ध अभिनेता और फ़िल्म निर्माता निर्देशक हैं और रोशन जी के दूसरे पुत्र राजेश रोशन भी अपने पिता की तरह ही एक जानेमाने संगीतकार हैं और ये तो हम सभी जानते ही हैं कि राकेश रोशन के पुत्र श्रद्धांतिक रोशन आज के दौर के बहुत बड़े स्टार हैं। उल्लेखनीय है कि 'रोशन नागरथ' जी की मृत्यु के बाद, उनके सम्मान में परिवार ने 'नागरथ' सरनेम हटाकर 'रोशन' को अपना उपनाम बना लिया था।

आज हम चर्चा करेंगे इस परिवार के सुप्रसिद्ध संगीतकार राजेश रोशन के बारे में जिनका 24 मई को जन्मदिवस होता है। हिंदी फिल्म संगीत के इतिहास में कुछ संगीतकार ऐसे हुए हैं जिन्होंने अपनी विशिष्ट शैली, मधुर धुनों और प्रयोगधर्मिता से श्रोताओं के दिलों में स्थायी गूँहा बनाई है। राजेश रोशन उन्हीं चुनिंदा संगीतकारों में से एक हैं। पिछले पांच दशकों से फिल्म जगत में सक्रिय राजेश रोशन ने न केवल अपनी संगीत की विरासत को संभाला, बल्कि उसे नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। उन्होंने हिंदी सिनेमा को अनेक यादगार गीत दिए, जिनमें मधुरता, भावनात्मक गहराई और आधुनिकता का सुंदर संगम दिखाई देता है। राजेश रोशन

ने ऐसे समय में अपनी पहचान बनाई जब हिंदी फिल्म संगीत में आर. डी. बर्मन, लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल और कल्याणजी-आनंदजी जैसे दिग्गज छाये हुए थे। इसके बावजूद उन्होंने अपनी अलग शैली विकसित की और मधुर संगीत के पर्याय बन गए। जब राजेश रोशन बहुत छोटे थे तो भी उनके पिता का निधन हो गया। उनके परिवार ने उन्हें संगीत की शिक्षा और प्रोत्साहन दिया। उन्होंने पियानो और अन्य वाद्ययंत्रों का अभ्यास किया तथा धीरे-धीरे संगीत रचना की ओर आकर्षित हुए, उन्होंने अपनी माँ गायिका इरा रोशन और उस्ताद फैयाज अहमद खान से संगीत की प्रारंभिक शिक्षा ली। बाद में उन्होंने मशहूर संगीतकार जोड़ी लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल के साथ सहायक के रूप में काम किया और संगीत की बारीकियाँ सीखीं।

राजेश रोशन को हिंदी फिल्मों में पहला अवसर वर्ष 1974 में मशहूर कॉमेडियन और एक्टर महमूद ने अपनी फिल्म 'कुंवार बाप' में दिया। इस फिल्म का संगीत बड़ा लोकप्रिय हुआ। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। इस फिल्म के गीत 'सज रही गली मेरी माँ', 'मैं हूँ घोड़ा ये है गाड़ी', 'आ री आजा नन्दिया तू' बड़े लोकप्रिय हुए। इस फिल्म का सबसे मशहूर गाना 'सज रही गली मेरी माँ' उन्होंने 15 असली किन्हीं के साथ रिकॉर्ड किया था, जो उस समय एक साहसी और अनोखा प्रयोग था, इसके बाद वर्ष 1975 में आई फिल्म जूली ने उन्हें फिल्म जगत में स्थापित कर दिया। मशहूर गीतकार आनंद बक्षी ने इस फिल्म के यादगार गीत लिखे थे। फिल्म के गीत 'दिल क्या करे जब किसी से', 'माय हार्ट इज़ बीटिंग', 'ये रातें नई पुरानी', 'भूल गया सब कुछ' आदि बहुत लोकप्रिय हुए। इस फिल्म के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ संगीतकार का फिल्मफेयर पुरस्कार भी दिया गया।

सत्तर और अस्सी के दशक में राजेश रोशन ने लगातार कई सफल फिल्मों में संगीत दिया। उन्होंने रोमांटिक गीतों के साथ-साथ भावपूर्ण और सूफियाना अंदाज के



संगीतकार राजेश रोशन

गीत भी रचे। उनकी प्रमुख फिल्मों में शामिल हैं, कुंवारा बाप, जूली, स्वामी, दूसरा आदमी, देस परदेस, काला पत्थर, मिस्टर नटवरलाल, याराना, लूटमार, मनपसंद, बातां बातां में, स्वर्ग नर्क, प्रियतमा, कामचोर, खुदगर्ज, करनार्जुन, खून भरी मांग, किशन कन्हैया, किंग अंकल, जुम, डैडी, दरिया दिल, कहां ना प्यार है, कोई मिल गया, कृष्, काइदस आदि।

यश चोपड़ा की क्लासिक फिल्म 'काला पत्थर' के साहस साहब की जादुई कलम से निकले राजेश रोशन के संगीतबद्ध गीत 'एक रास्ता है जिंदगी', 'मेरी दूरी से आयी बारात', 'धूम मची धूम', 'बाहों में तेरी मस्ती के घेरे' आज भी सदाबहार गीतों में गिने जाते हैं। इन गीतों में भावनाओं की सादगी और धुनों की मिठास स्पष्ट झलकती है। इसी प्रकार उनकी अमिताभ बच्चन अभिनीत सुपर हिट फिल्म 'याराना' के गीत 'छूकर मेरे मन को', 'सारा जमाना हसीनों का दीवाना' तथा 'तेरे जैसा यार कहीं', 'मेरे यार को मना दे' ने लोकप्रियता के नये आयाम स्थापित किये।

राजेश रोशन के संगीत से सजी एक और फिल्म जिसका जिक्र करना चाहूंगा, वो फिल्म थी क्लासिक

रोमांटिक फिल्म 'दूसरा आदमी'। गीतकार थे महान गीतकार मजरूह सुलतानपुरी, इस फ़िल्म के गीत राजेश रोशन को बिलक्षण प्रतिभा को दर्शाते हैं और एक अलग किस्म की खूबसूरती और ताज़गी लिये हुए हैं, फ़िल्म के सभी गाने 'आओ मनाएँ ज़रने मोहब्बत', 'चल कहीं दूर निकल जाएँ', 'नज़रों से कह दो प्यार में', 'जान मेरी रूठ गई', 'आँखों में काजल है', बेहद सुकून भरे मेलोडियस टुक हैं और लाजवाब बन पड़े हैं।

राजेश रोशन ने हर दौर के बड़े कलाकारों और निर्देशकों के साथ काम किया, उन्होंने किशोर कुमार, लता मंगेशकर, आशा भोसले, मोहम्मद रफ़ी जैसे महान गायकों के साथ काम किया। बहुत कम लोग जानते हैं कि राजेश रोशन ने ही पहली बार अमिताभ बच्चन को फिल्म 'मिस्टर नटवरलाल' के गाने 'मेरे पास आओ मेरे दोस्तों' के जरिए गायक के रूप में पेश किया था।

राजेश रोशन और उनके भाई राकेश रोशन की जोड़ी हिंदी सिनेमा की सफलतम जोड़ियों में गिनी जाती है। राकेश रोशन की सुपर हिट फिल्मों 'कामचोर', 'खुदगर्ज', 'खून भरी मांग', 'करण अर्जुन', 'कहां ना प्यार है', 'कोई मिल गया', 'कृष्' और 'काबिल' जैसी फिल्मों में राजेश रोशन ने ऐसा कर्णप्रिय संगीत दिया जिसने इन फिल्मों को लोकप्रियता की नई ऊँचाइयों प्रदान कीं, विशेष रूप से 'कहां ना प्यार है' का संगीत युवाओं के बीच अत्यंत लोकप्रिय हुआ। इसी फिल्म ने उनके भतीजे श्रद्धांतिक रोशन को सुपरस्टार बनाया, इस फिल्म के गीत आज भी पसंद किए जाते हैं।

राजेश रोशन की संगीत शैली में भारतीय शास्त्रीय संगीत, लोकधुनों और पारंपारिक संगीत का संतुलित मिश्रण दिखाई देता है। वे सरल लेकिन दिलकश धुनें बनाने के लिए जाने जाते हैं। उनके गीतों में भावनात्मक गहराई और संगीतात्मक सौंदर्य का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। यही कारण है कि उनके अधिकतर गीत आज भी रेडियो, संगीत कार्यक्रमों और डिजिटल मंचों पर बेहद लोकप्रिय हैं।

लगभग पाँच दशकों के लंबे करियर में राजेश रोशन ने करीब 125 फिल्मों में संगीत दिया। राजेश रोशन हिंदी फिल्म संगीत के उन रचनाकारों में हैं जिन्होंने मधुरता और संवेदनशीलता को हमेशा प्राथमिकता दी। उन्होंने बदलते दौर के साथ स्वयं को ढाला, लेकिन अपनी संगीतात्मक पहचान को कभी खिले नहीं दिया। राजेश रोशन को फिल्म जूली (1975) के लिए पहला फिल्मफेयर पुरस्कार प्राप्त हुआ। वर्ष 2000 में फिल्म 'कहां ना प्यार है' के लिए उन्हें एक बार फिर फिल्मफेयर पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त भी उन्हें अनेक संगीत पुरस्कारों और सम्मानों से नवाजा जा चुका है। उनके पिता की तरह ही हिंदी फिल्म संगीत में उनके योगदान को सदैव सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। आज के लिये इतना ही, आगे सप्ताह फिर मुलाकात होगी, तब तक फ़िल्म 'बातां बातां में' का राजेश रोशन का संगीतबद्ध बेहद मोटिवेशनल गीत सुनिए और सदा मोटिवेटेड रहिये, खुश रहिये.....

कहाँ तक ये मन को अंधेरे छलेंगे उदासी भरे दिन कभी तो ढलेंगे

कभी सुख कभी दुःख, यही जिंदगी है ये पतझड़ का मौसम घड़ी तो घड़ी है नये फूल कल फिर डगर में खिलेंगे उदासी भरे दिन कभी तो ढलेंगे

भले तेज कितना, हवा का हो झोंका मगर अपने मन में तू रख ये भरोसा जो बिछड़े सफ़र में तुझे फिर मिलेंगे उदासी भरे दिन कभी तो ढलेंगे

कहे कोई कुछ भी, मगर सच यही है लहर प्यार की जो कहीं उठ रही है उसे एक दिन तो किनारे मिलेंगे उदासी भरे दिन कभी तो ढलेंगे

बाँक्स ऑफिस पर 'द केरल स्टोरी' जैसी ब्लॉकबस्टर फिल्मों देने वाले निडर प्रोड्यूसर-डायरेक्टर विपुल अमृतलाल शाह एक बार फिर इंडियन सिनेमा का चेहरा बदलने आ रहे हैं। लोक से हटकर सोचने वाले विपुल शाह अब अक्षय कुमार के साथ मिलकर भारत की पहली प्रोड्यूसर-एलियन थ्रिलर फिल्म 'समुक' दिखेंगे।

लेकर आ रहे हैं। फिल्म को लेकर सस्पेंस बरकरार है, लेकिन मेकर्स ने इसके स्केल को लेकर जो खुलासा किए हैं, उसने फैंस के होश उड़ा दिए हैं। अपनी मोस्ट-अवेटीड फिल्म 'गवर्नर' के ग्रैंड ट्रेलर लॉन्च पर विपुल शाह ने 'समुक' पर से पर्दा उठाते हुए कहा, 'समुक' एक ऐसी फिल्म है जो सिनेमा के सारे स्थापित नियमों को तोड़ देगी। इंडिया में आज तक ऐसी

प्रोड्यूसर-एलियन थ्रिलर फिल्म नहीं बनी है। इस मेगा-प्रोजेक्ट के लिए हमने हॉलीवुड के सबसे बड़े दिग्गजों से हाथ मिलाया है। हॉलीवुड की हर प्रोड्यूसर फिल्म का हिस्सा रहे 'एलेक गिलिस' हमारे एलियन क्रिएटर को डिजाइन कर रहे हैं, जबकि 'वेनम' जैसी सुपरहिट फिल्म देने वाले प्रोड्यूसर-डायरेक्टर 'ल्यूक' इसके एक्शन सीन्स को डायरेक्ट करेंगे।

एलियन थ्रिलर से वापसी करेंगे विपुल शाह

स्मृति शोष बशीर बद्र की शायरी में कठोर यथार्थ की गूँज

मेरठ की गलियों से उठकर उर्दू शायरी को एक नई पहचान देने वाले बशीर बद्र का नाम आधुनिक ग़ज़ल के इतिहास में बेहद सम्मान से लिया जाता है। उनकी शायरी में जहाँ एक ओर प्रेम और सौंदर्य की नज़ाकत मिलती है, वहीं दूसरी ओर जीवन के कठोर यथार्थ और सामाजिक सच्चाइयों की गूँज भी सुनाई देती है। 'कुछ तो मजबूरियाँ रही होंगी जैसे शेरों ने उन्हें हर वर्ग के पाठक का प्रिय बना दिया।



मेरठ छोड़कर भोपाल क्यों चले गए थे बशीर बद्र

मेरठ कॉलेज में उर्दू विभाग के शिक्षक के रूप में उन्होंने कई विद्यार्थियों को साहित्य की ओर प्रेरित किया। वे केवल एक शायर नहीं, बल्कि एक विचारधारा थे जहाँ भाषा सरल थी, लेकिन अर्थ बेहद गहरे। मुशायरों में उनकी उपस्थिति पूरे माहौल को जीवंत कर देती थी और उनकी आवाज़ श्रोताओं के दिलों तक उतर जाती थी। 1987 के मेरठ दंगों ने उनके जीवन पर गहरा असर डाला।

बेटियों के लिए खास शेर
बेटियों की एहमियत को उन्होंने यूँ बर्बाद किया-
वो शाख है न फूल, अगर तिलवर्षियों न हों
वो घर भी कोई घर है जहाँ बच्चियाँ न हों
शोहरत की बुलंदी भी पलभर का तमाशा है
जिस डाल पर बेटे हो, वो टूट भी सकती है

नफरत का सामना करना पड़ा था। इन दंगों में उनका घर जला दिया गया था। इस हादसे में उनकी कई ऐतिहासिक अप्रकाशित रचनाएँ और कविताएँ हमेशा के लिए नष्ट हो गईं। इस घटना के बाद ही वे हमेशा के लिए भोपाल स्थित हो गए थे। बशीर बद्र ने भारत के बंटवारे के चक्के भी कई शायरी लिखीं, जो आज तक लोगों के जहन में हैं। शिमला समझौते के समय तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने पाकिस्तान के जुल्फिकार अली भुट्टो को बशीर बद्र की बंटवारे के चक्के लिखा एक शेर सुनाया था। ये शेर था **दुश्मनी जमके करो लेकिन ये गुंजाइश रहे जब कभी हम दोस्त बन जाएँ तो शर्मिन्दा ना हों।**

फैंस पहुंचे अनु और आर्या को आशीर्वाद देने



जो टीवी का 'तुम से तुम तक' भारतीय टेलीविजन पर एक बेहद खास और दिल छू लेने वाला पल रचने जा रहा है। पहली बार शो में असल जिंदगी के कपल्स, अपनी बेटियों के साथ, अनु और आर्या की ग्रैंड शादी का हिस्सा बनेंगे। ये कपल्स बंगलुरु से आए और इस पल को और भी खास बनाती है एक दिलचस्प बात, उनकी शादी की तारीख भी अनु और आर्या की शादी की तारीख जैसी ही है। यही वजह है कि यह जश्न उनके लिए सिर्फ एक शो का हिस्सा नहीं, बल्कि बेहद निजी और जञ्जाती अनुभव बन गया। रिश्तों, जञ्जातों और 'आपका अपना जो टीवी' की भावना से जुड़ी कहानियाँ पेश करने के लिए पहचाना जाने वाला जो टीवी इस बार इस जश्न को स्क्रीन से आगे ले गया। चैनल ने अपने इन खास दर्शकों को मुंबई बुलाया, ताकि वे अपने फेवरेट ऑनस्क्रीन कपल्स अनु और आर्या को शादी के जश्न को असल में महसूस कर सकें। अनु और आर्या की लव स्टोरी के बड़े फैन रहे थे परिवार बंगलुरु से खास मुंबई पहुंचे और उन्होंने सेट पर शादी की भव्यता, रस्मों, खुशियों और जञ्जातों से भरे हर पल को करीब से जिया। रील और रियल के इस खूबसूरत मिलन में इन परिवारों को टेलीविजन की दुनिया को करीब से देखने का मौका मिला। साथ ही वे उस कहानी का हिस्सा बने, जिससे वे लंबे समय से जञ्जाती तौर पर जुड़े हुए हैं। शादी के इस जश्न में उनकी मौजूदगी ने कहानी में एक और खूबसूरती जोड़ दी, जिसने सेट पर मौजूद हर शख्स के लिए इस मौके को और यादगार बना दिया।

सुखियों में अनुपमा का कौटन साड़ी लुक



स्टार प्लस के फैशन स्पेशल 'फैशन के रंग, रिश्तों के संग' को लेकर पहले से ही काफी चर्चा हो रही है। खबरों की मारों तो चैनल इस इवेंट को टेलीविजन का अपना 'मेड-गाला' बनाने की तैयारी में है। 1 जून को शाम 7 बजे टेलीकास्ट होने वाला यह स्पेशल इवेंट फैशन, एंटरटेनमेंट और मॉकेड पलों से भरपूर होने वाला है, जहाँ पूरा स्टार परिवार एक साथ नजर आएगा। इस खास इवेंट को लेकर दर्शकों में जबरदस्त एक्साइटमेंट देखने को मिल रही है क्योंकि इस बार टीवी सितारे अपने ऑनस्क्रीन किरदारों से बिल्कुल अलग अंदाज में दिखाई देंगे। रोजाना के सिंपल लुक से हटकर कई एक्टर्स स्टेट-इम्पायर्ड आउटफिट्स में रैंप वॉक करते नजर आएंगे, जो भारत की सांस्कृतिक विविधता को सेलिब्रेट करेंगे। प्रेम और राही गुजराती लुक में गुजरात को रिप्रेजेंट करेंगे, सायली और सचिन महाराष्ट्र की झलक दिखाएंगे। अरमान और अर्भीरा राजस्थान की रंगीन संस्कृति को पेश करेंगे। सूति और शम्बीर मध्य प्रदेश को रिप्रेजेंट करेंगे, वहीं अंगद और वृंदा भी गुजराती-इम्पायर्ड आउटफिट्स में नजर आएंगे। हालाँकि, इस पूरे इवेंट में जिस बात ने सबसे ज्यादा लोगों का ध्यान खींचा है, वह है रूपाली गांगुली का बिल्कुल अलग और ग्लैमरस अंदाज। अपने आइकॉनिक किरदार अनुपमा से हटकर नए लुक में नजर आने को लेकर रूपाली ने इवेंट शूट के दौरान कहा, 'मैंने कुछ दिन पहले एक मेट गाला वाला पोस्ट डाला था। मुझे बहुत मजा आ रहा था जब फैंस अपने कॉन्स्ट्र्यूट्स को मेट-गाला लुक में बदल रहे थे। उसी से स्टार प्लस वालों को भी यह आइडिया आया। और सच कहूँ तो मुझे भी बहुत मजा आ रहा है क्योंकि ऐसे कपड़े पहनने का मौका कहीं मिलाता है।

डार्क ह्यूमर से भरपूर होगी नई फिल्म वेलकम



बेहद खास म्यूजिकल सीक्वेंस भी देखने को मिलेंगे, जो पूरी फिल्म के मूड और एंटरटेनमेंट लेवल को और ऊँचा करेंगे। हाल ही में रिलीज हुए फिल्म के दो गाने टाइटल ट्रैक और 'घिस घिस' पहले ही सोशल मीडिया पर चर्चा में हैं। खासतौर पर भोजपुरी प्लेबेर वाले 'घिस घिस' में अक्षय कुमार का नया अंदाज दर्शकों को काफी पसंद आ रहा है। अहमद खान ने फिल्म के जॉरों को लेकर भी बड़ा हिट दिया। उन्होंने कहा कि यह एक 'डार्क ह्यूमर' फिल्म है, जिसमें कॉमेडी को बिल्कुल अलग अंदाज में पेश किया गया है। उनके मुताबिक फिल्म के गानों को भी सिर्फ मनोरंजन नहीं बल्कि कहानी के प्लो और ह्यूमर को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है।

फिटनेस में क्यों सबसे आगे हैं रश्मिका योग, जिम और अनुशासन का कमाल

रश्मिका मंदाना आज सिर्फ अपनी शानदार एक्टिंग के लिए ही नहीं, बल्कि अपनी जबरदस्त फिटनेस और हेल्दी लाइफस्टाइल के लिए भी खूब चर्चा में रहती हैं। कम उम्र में ही उन्होंने जिस तरह खुद को फिट और एनर्जेटिक बनाए रखा है, वह युवाओं के लिए बड़ी प्रेरणा बन चुका है। रश्मिका अपने दिन की शुरुआत योग और मेडिटेशन से करती हैं। उनका मानना है कि मानसिक शांति और शारीरिक फिटनेस दोनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। यही वजह है कि वे रोजाना कुछ समय ध्यान और ब्रॉडिंग एक्सरसाइज को जरूर देती हैं। वर्कआउट की बात करें तो रश्मिका कार्डियो, स्ट्रेंथ ट्रेनिंग और डांस वर्कआउट को अपने रूटीन में शामिल करती हैं। वे

घंटों जिम में रहने की बजाय स्मार्ट और नियमित एक्सरसाइज को ज्यादा महत्व देती हैं। शूटिंग में व्यस्त रहने के बावजूद वे अपने फिटनेस शेड्यूल को मिस नहीं करतीं। उनकी डाइट भी काफी संतुलित मानी जाती है। रश्मिका घर का बना हल्का और पौष्टिक खाना पसंद करती हैं। वे जंक फूड और ज्यादा मीठे से दूरी बनाकर रखती हैं। फल, सलाद, प्रोटीन और पर्याप्त पानी उनके डेली रूटीन का अहम हिस्सा हैं। इसके अलावा, रश्मिका नींद को भी फिटनेस का जरूरी हिस्सा मानी हैं। उनका कहना है कि शरीर को स्वस्थ रखने के लिए पर्याप्त आराम बेहद जरूरी है। यही वजह है कि वे अपने व्यस्त शेड्यूल में भी अच्छी नींद लेने की कोशिश करती हैं।



करण जौहर की फिल्मों का क्रेज आज भी बरकरार

करण जौहर का धर्मा प्रोडक्शंस बॉलीवुड की सबसे सफल फिल्म प्रोडक्शन कंपनियों में गिना जाता है। पिछले कई सालों में इस बैनर ने ऐसी फिल्मों दी हैं जिन्होंने कंटेंट के साथ-साथ बॉक्स ऑफिस पर भी जबरदस्त प्रदर्शन किया। रोमांटिक ड्रामा से लेकर बड़े बजट की एक्शन और फैंटेसी फिल्मों तक, धर्मा की फिल्मों ने दर्शकों के बीच अलग पहचान बनाई है। इस लिस्ट में सबसे ऊपर नाम आता है रणवीर कपूर और आलिया भट्ट स्टार 'ब्रह्मस्त्र: पार्ट 1-शिवा'। का.साल 2022 में रिलीज हुई इस फिल्म ने दुनियाभर में करीब 431 करोड़ रुपये की कमाई की थी। फिल्म की विजुअल इफेक्ट्स और कहानी को लेकर काफी चर्चा हुई थी। दूसरे नंबर पर रणवीर सिंह की फिल्म 'सिम्बा' रही, जिसने एक्शन और कॉमेडी के दम पर शानदार कमाई की। वहीं करण जौहर

की डायरेक्टोरियल फिल्म 'रंकी और रानी की प्रेम कहानी' ने भी रोमांटिक ड्रामा के जरिए दर्शकों का दिल जीता और 355 करोड़ रुपये से ज्यादा का बिजनेस किया। अक्षय कुमार की 'गुड न्यूज' भी इस लिस्ट में शामिल है। आइवीएफ जैसे अलग विषय पर बनी इस कॉमेडी-ड्रामा फिल्म को दर्शकों ने खूब पसंद किया और फिल्म ने 318 करोड़ रुपये से ज्यादा की कमाई की। इसके अलावा अक्षय कुमार की 'सूर्यवंशी' और 'केसरी' ने भी बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन किया। रणवीर कपूर और दीपिका पादुकोण की सुपरहिट फिल्म 'ये जवानी है दीवानी' आज भी युवाओं की पसंदीदा फिल्मों में गिनी जाती है। इस फिल्म ने रोमांस और दोस्ती के कॉन्सेप्ट को नए अंदाज में पेश किया था और करीब 257 करोड़ रुपये की कमाई की थी। धर्मा प्रोडक्शंस की इन फिल्मों की सफलता यह साबित करती है कि करण जौहर सिर्फ बड़े स्टार ही नहीं, बल्कि दमदार कंटेंट पर भी भरोसा करते हैं।

